

रतिवर्धन पुं. (तत्.) कामवासना को बढ़ाने वाला औषध।

रतिशास्त्र पुं. (तत्.) जिस शास्त्र में कामवासना की बातों का उल्लेख हो, कामशास्त्र जैसे-वात्स्यायन का कामसूत्र।

रतिसंप्रदाय पुं. (तत्.) नीति. यूनान में प्रेम के देवता (कामदेव) का धार्मिक पंथ, अनुराग पथ।

रती स्त्री. (तत्.) 1. रति, कामदेव की पत्नी 2. वि. कार्य में अनुराग रखने वाला, अनुरक्त, ध्यानमग्न, लगा रहने वाला।

रतीक क्रि.वि. (तत्.) बहुत कम, जरा-सा।

रतीश पुं. (तत्.) रति का पति, कामदेव।

रतूबत स्त्री. (अर.) शरीर का आंतरिक कफ आदि विकार, शरीर के भीतर का आर्द्रता-पूर्ण विकार।

रतोपल पुं. (तद्.) रक्तोत्पल, लाल कमल।

रतौंधी स्त्री. (तद्.) ऐसा रोग जिसमें रात में कुछ नहीं दिखता, अंधापन का रोग। night blindness

रत्त पुं. (तद्.) रक्त, लाल वि. लगा रहने वाला, रत या संलग्न।

रत्ती स्त्री. (तद्.) 1. रति, प्रीति, सुंदरता 2. माप तोल की एक इकाई, (तोला-माशा-रत्ती) में तोला का आठवाँ हिस्सा, थोड़ा सा टि. 'रत्ती-रत्ती' शब्द का प्रयोग 'सब या पूरे' अर्थ में होता है क्रि.वि. रत्ती का थोड़ा-थोड़ा अर्थ में प्रयोग होता है।

रथी स्त्री. (तद्.) एक ढाँचा जिसमें रखकर शव को अंतिम क्रिया के लिए श्मशान ले जाते हैं, 'अरथी'।

रत्न पुं. (तत्.) 1. मूल्यवान, चमकता हुआ खनिज पदार्थ जो आभूषणों में जड़ा जाता है, मणि-माणिक्य (हीरा, नीलम, नगीना आदि रत्न कहलाते हैं) 2. सर्वश्रेष्ठ।

रत्नकक्ष पुं. (तत्.) रत्न रखने का कमरा।

रत्नकर पुं. (तत्.) कुबेर का एक नाम।

रत्नकरा स्त्री. (तत्.) काव्य. एक समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, दो सगण (म स स) के होने से कुल नौ वर्ण होते हैं।

रत्नकार पुं. (तत्.) रत्न का व्यवसाय करने वाला, रत्न विक्रेता।

रत्नगृह पुं. (तत्.) बौद्ध स्तूप के बीच का प्रकोष्ठ जिसमें महात्मा बुद्ध की अस्थि को रखा जाता है।

रत्ननिधि पुं. (तत्.) रत्नों का खजाना, समुद्र।

रत्नपारखी पुं. (तद्.) रत्नों की परीक्षा करने वाला, रत्न की जाँच करने वाला जौहरी।

रत्नफलक पुं. (तद्.) रत्न रखने का उपकरण।

रत्नमार्ग वि. (तत्.) जिसके अंदर (गर्भ में) रत्न (भरा) हो यानि पृथ्वी, पृथ्वी को वसुंधरा भी कहते हैं।

रत्नमाला स्त्री. (तत्.) रत्नों की माला या हार (रत्नों का कंठहार)।

रत्नसू वि. (तत्.) रत्न उत्पन्न करने वाली (रत्नप्रसू) धरती, वसुंधरा, रत्नों की खान।

रत्नावली स्त्री. (तत्.) 1. रत्नों का समूह, रत्नों की श्रेणी या शृंखला 2 गोस्वामी तुलसीदास की पत्नी का नाम जिसकी प्रेरणा से तुलसीदास को रामभक्ति की प्रेरणा मिली।

रसमाता स्त्री. (तत्.) रसमातृका, जीभ वि. रस या आनंद में मस्त, प्रेम में मत्त।

रथंग पुं. (तत्.) रथ का अंग या हिस्सा, रथ का पहिया। (रथ का कोई हिस्सा)।

रथ पुं. (तत्.) 1. एक प्रकार का वाहन, जिसमें चार पहिए होते हैं और उसे दो या दो से अधिक घोड़े खींचते हैं, प्रायः प्राचीन काल में इस प्रकार के यान का राजदरबारों तथा भूपतियों के यहाँ अधिक प्रचलन था, आजकल इसका प्रचलन बहुत कम हो गया है 2. चक्र 3. एक प्रकार का अस्त्र।

रथांगपाणि वि. (तत्.) श्रीकृष्ण या विष्णु का नाम टि. श्रीकृष्ण और विष्णु चक्र धारण करते हैं